to protest against the repeated and large scale attacks on the journalists and the pressmen. Sir, lately there have been a number of incidents of attacks on the press in various parts of the country, particularly in the States ruled by the Congress. And, in fact any attack on the pressmen is an attack on democracy itself. And the police are inactive and anti-social elements are being used by some political elements to launch attacks on the press. And recently such incidents have increased in States like Uttar Pradesh and Himachal Pradesh. There have been brutal attacks on Shri Hari Om Gupta, a reporter of 'Viswa Manav' daily at Bareilly. And there were attacks on Shri Subhash Gupta of Daily 'Amar Ujala' and there was a day-light murder also of Mr. Umesh Dobal in Garhwal. These are some of the recent incidents of attacks on the journalists. And the delegation met the Home Minister and requested that action should be taken immediately to protect the journalists and the press. Instructions should be issued to the State Governments also to make special efforts for the protection of journalists. And through you, Sir, I would like to draw the attention of the Government to this serious problem. I hope the Union Government would take up the matter with the concerned State Governments so that such incidents will not recur. Thank you, Sir.

**श्री सत्य प्रकाश मालवीय** (उत्तर प्रदेश) : मान्यवर, इसका ध्यान रखिए कि यह सब कांग्रेस शासित राज्य हैं । इस ओर सरकार को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है । पत्रकारों की ओर जो पत्रकारिता का समूह है, इसकी उपेक्षा नहीं होनी चाहिए ।

SHRI A. G. KULKARNI (Maharashtra): Sir, I associate with him. But why exclude the other journalists in other States? Everywhere it is going on. (*Interruptions*). Whether in Haryana or West Bengal or Andhra Pradesh or Karnataka, everywhere it is going on. Sir, I support him to the extent that journalists should be protected in the other Opposition-ruled States also, anywhere in the country.

SHRI PARVATHANENI UPENDRA: I said all over the country, particularly the Congress ruled States. (*Interruptions*).

SHRI B. SATYANARAYAN REDDY (Andhra Pradesh): They have clearly said that in the Congress ruled States Journalists have been attacked and butchered by Congress people with the help of... (*Interruptions*).

SHRI A. G. KULKARNI: There are many instances in various States where journalists are attacked. It is not only in the Congress States. It is in Andhra Pradesh also. It is in Karnataka, it is in Haryana, in West Bengal; everywhere. The point is that journalists should be protected anywhere.

SHRI B. SATYANARAYAN REDDY: Sir, it is about the procession that was taken. (*Interruptions*). They have given a memorandum to the Home Minister and that fact has been brought in the special mention. (*Interruptions*).

**श्री रामनरेश यादव** (उत्तर प्रदेश) : श्रीमान, मैं भी इसका समर्थन करता हूं इसको बन्द करना चाहिए . . . (*व्यवधान*)

SHRI A. G. KULKARNI: Please support freedom of the press wherever it is attacked.

**Imposition of Central Levy on Rice Mills in Bihar**

**श्री राम अवधेश सिंह** (बिहार) : उपसभाध्यक्ष महोदय, मैंने जो विशेष उल्लेख के लिए निवेदन किया है वह कई बार मैंने इस उम्मीद के साथ किया कि शायद इस सरकार को कुछ हया, शर्म हो और कुछ कार्यवाही करे । महोदय, हाथी के दांत दिखाने के और तथा खाने के और होते हैं उसी तरह से केन्द्र सरकार की नीतियां ऐसी हैं जो बिहार को कंगाल कर रही हैं, खासकर जो सवाल मैं उठा रहा हूं वह खनिज के शोषण और दुरुपयोग के बारे में है ।

महोदय, हमारे यहां जो राइस मिल किसी तरह से चल रही थीं उनको मारने

[श्री राम अवधेश सिंह]

की आज साजिश चल रही है। मैं उसी की ओर आपके माध्यम से सरकार का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं। महोदय, सरकार एक तरफ कहती है कि किसानों को हम उचित मूल्य दिलायेंगे और दूसरी तरफ वह लेवी लगाती है चावल मिलों पर, ढाई हजार क्विंटल की राइस मिलों पर और जो छोटे-छोटे हलर हैं, उन पर 500 क्विंटल पर लेवी लगाती हैं और उसकी वसूली तेजी से जारी हैं उसका अंजाम यह हो रहा है कि धान की कीमत राइस मिल वालों ने कम कर दी हैं और 50 रुपए क्विंटल दाम धान का गिर गया है, नतीजा यह हो रहा है कि सारे किसान त्राहि-त्राहि कर रहे हैं और हमारी सोन अंचल के रोहतास, जहांनाबाद, औरंगाबाद, गया, पटना आदि जिलों में जो की सोन अंचल में पड़ते है, जहां कम से कम 70 या 75 राइस मिलें है वे किसानों का शोषण कर रही हैं और 12 से 15 करोड़ रुपये की क्षति किसानों की हो रही है।

मान्यवर, मेरे निवेदन करने का खास कारण यह है कि इस साल जो पानी सोन नहर को मिलना चाहिए था वह भी नहीं मिला। इसलिए धान भी सूख गया। उसका नतीजा यह है कि धान की फसल आधी हो गई और जो आधी फसल हुई उसका कारण यह है कि हिन्द डैम का जो समझौता भारत सरकार ने उत्तर प्रदेश सरकार के साथ कराया है, वहां से हमको पानी नहीं मिला। हिन्द डैम के गलत समझौते से हमारी कमर टूट रही हैं, और पानी न मिलने से फसल मारी जा रही है। इसलिए मेरा भारत सरकार से निवेदन है कि इन 6 जिलों में तत्काल जो भी लेवी लगाई गई है उसको वापस कर दिया जाय। यदि लेवी रहेगी तो किसान लुट जायेंगे और उनके पास कोई चारा नहीं रह जाएगा। साथ ही बाढ़ग्रस्त इलाकों पर जो लेवी है उनको भी फसल मारी गई है और सारे प्रदेश में चंपारन से लेकर पूर्णिया तक सबकी फसल मारी गई है। जो क्षतिग्रस्त इलाके है उन इलाकों में इसको माफ किया जाये क्योंकि अभी तक इस पर नोटिस नहीं दिया जायेगा, सूचना नहीं दी जायेगी तो जो उन्होंने कर्जा लिया हुआ है धान के लिए उस कर्जे को चुकाने के लिए उनको मजबूर होकर खेत को और बीज को बेचना पड़ेगा। इससे बिहार का काफी नुकसान होगा। (**समय की घंटी**) मान्यवर, एक विशेष उल्लेख पर दो दिन तक बहस चली थी इसी हाउस में और मैंने तो अभी तीन ही मिनट लिये है।

**उपसभापति (श्री हेच० हनुमनतप्पा)** : आप खत्म कीजिए।

**श्री राम अवधेश सिंह** : मान्यवर, जो भारत सरकार की नीतियां चल रही हैं उन नीतियों के चलते बिहार कंगाल हो गया है। मैं चाहता रहा हूं कि सरकार यह कुनीतियां छोड़े। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि हमारे यहां से जो खनिज बाहर आते है उन पर रायल्टी मिलती है। कोयले पर एक से डेढ़ फीसदी मिलती है जब कि असम को 25 फीसदी पैट्रोल पर मिलती है। वह क्योंकि आजाद है और लाठी के हाथ से राजीव गांधी से बात कर रहा है इसलिए उसको आप 25 फीसदी रायल्टी दे रहे हैं और हम को एक से डेढ़ फीसदी। हमारे यहां हमारा कोयला जो बिकता है वह 800 रुपये टन बिकता है रोहतास, चम्पारन वगैरह में और जब यह कोयला हरियाणा में या दूसरे प्रदेश में बेचा जाता हैं तो 500 रुपये टन के हिसाब से बेचा जाता है। यह हमारे यहां बर्दाश्त होने वाली चीज नहीं है। नाक से ऊपर पानी आ गया है। मैं इस सदन में वार्निंग करता हूं, चेतावनी देता हूं सदन के माध्यम से सरकार को कि फ्रेट इक्विलाइजेशन की पालिसी को खत्म नहीं किया गया तो बिहार दो महीने के अन्दर आग का गोला बन जायेगा और दहकता बिहार आपके सामने दिखाई देगा। हम यह कैसे बर्दाश्त कर सकते हैं। लोहा भी हमारे यहां 300 रुपये टन महंगा मिलता है। यह अन्याय नहीं चलने वाला है। मैं सरकार से कहूंगा कि जो पालिसी सरकार की है जनसंख्या के आधार पर ...

**उपसभाध्यक्ष (श्री हेच० हनुमनतप्पा)**: राम अवधेश जी अभी प्रेजीडेंट एड्रेस पर, बजट पर बहस होनी है ...

**श्री राम अवधेश सिंह** : मैं सदन छोड़ कर जा रहा हूं, सड़क पर जा रहा हूं।

**एक माननीय सदस्य** : हमेशा के लिए?

**श्री राम अवधेश सिंह** : 10-15 रोज बिहार में हो रहकर आग लगाऊंगा इसलिए जा रहा हूं। मैंने इस सदन में दो साल तक बोल कर देख लिया है कुछ नहीं हुआ। अब सड़क पर ही जाना है। (**व्यवधान**) जनसंख्या के आधार पर योजना में आवंटन बिहार को नहीं किया गया तो बहुत नुकसान होगा। हमारी साढ़े दस फीसदी आबादी है और इसके हिसाब से सातवीं पंचवर्षीय योजना में एक लाख 80 हजार करोड़ की होती है। हम 11 परसेंट नहीं मांगते हमें तो साढ़े दस फीसदी ही दीजिए ताकि हम को 18 हजार 900 करोड़ रुपया मिले। एक पंचवर्षीय योजना में 13 हजार 800 करोड़ एक सूबे का हिस्सा हो तो उसके निवासियों के तन पर वस्त्र नहीं चढ़ेगा, उनके निवासियों के घरों में दोनों समय चूल्हें नहीं जलेंगे। 45 फीसदी मिनरल्स बिहार में है और बाकी 55 फीसदी मिनरल्स सारे देश में हैं फिर भी बिहार कंगाल बना हुआ है। इसको हम कैसे बर्दाश्त कर सकते हैं। मैं कहना चाहता हूं सरकार जवाब दे। यहां दोनों बिहार के स्टेट मिनिस्टर बैठे हुए हैं। वह बेचारे क्या करेंगे। मैं उनको इसलिए बेचारा कह रहा हूं कि वह कुछ कर नहीं सकते। हमने कई बार उठाया एक का भी जवाब नहीं आया। यहां तो विधवा विलाप जैसा करते है और विधवा विलाप करके चल जाते हैं फिर जनता को कहते हैं हमने सदन में कह दिया। इतने से ही संतोष है इनको लेकिन अब यह कारवाई चलने नहीं दी जायेगी। आप इसको मजाक मत समझिये। सारा लोहा बिहार में पैदा होता है और राजस्थान और हरियाणा में चला जाता है। बिहार में लोगों के चूल्हे नहीं जलते हैं, 89 प्रतिशत लोगों के घरों में चूल्हें में आग नहीं जलती है (**व्यवधान**)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): You cannot convert this into a discussion. Please sit down.

**श्री राम अवधेश सिंह** : मैं आपके माध्यम से यह कहना चाहता हूं कि सरकार की तरफ से इसका जवाब दिया जाय ... (**व्यवधान**)। मैं बैठूंगा नहीं।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): You cannot convert this into a discussion. Please sit down. (*Interruptions*). You have to sit down, you cannot argue like this. (*Interruptions*). When I am standing, you have to sit down at least. You are a senior Member. Special mention has a time-limit. You have exceeded it by three times. You can raise this issue during some other discussion. There are provisions. Please conclude your special mention within half a minute more.

**श्री राम अवधेश सिंह** : मैं आधे मिनट में यह कहना चाहता हूं कि हम लोग यहां पर जो रुदन करते हैं, अपनी मांग रखते हैं, बिहार की जनता की ओर से बोलते हैं कि बिहार की दौलत लूट करके, भारत सरकार की नीतियों के चलते यह सब हो रहा हैं। इनकी फ्रेट यूटिलाइजेशन की जो नीति है, इनका प्लानिंग नीड बेस्ड न होकर रिसोर्स बेस्ड हैं, इसकी वजह से और कंसाइनमेंट टैक्स के चलते जो लूट चल रही है, उसका यहां, पर कोई जवाब नही आता हैं। बहस नहीं होती है और जब हम बिहार को सुविधायें देने की बात करते हैं तो उसका भी कोई जवाब नहीं दिया जाता है। कहा जाता है कि बिहार के लोग बुद्धू हैं, बिहार के लोग गरीब हैं। मैं यह कहना चाहता हूं कि बिहार के पास जो दौलत है उस दौलत पर हरियाणा और महाराष्ट्र गुलछर्रे उड़ा रहे हैं।

**उप सभाध्यक्ष (श्री हेच० हनुमनतप्पा)** : स्पेशल मेंशन का जवाब अभी नहीं आ सकता है इस तरह से स्पेशल मेंशन का जवाब नहीं आता है ।

**श्री राम अवधेश सिंह** : हमने यह सवाल नवम्बर में उठाया, दिसम्बर में उठाया, लेकिन कोई जवाब नहीं आया । इसलिए मैं क्यों बैठूं ? मैं पूछना चाहता हूं कि दो महीने तक सरकार ने इसका जवाब क्यों नहीं दिया ?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): Please sit down. (*Interruptions*).

THAKUR JAGATPAL SINGH (Madhya Pradesh): He is repeatedly disobeying the Chair. You are again and again telling him to sit down.

**श्री राम अवधेश सिंह** : ऐसा बहुत बार होता है ठाकुर साहब । आप लोग भी यही करते हैं ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): There is a limit for all these things. Please sit down.

**श्री राम अवधेश सिंह** : मान्यवर, मेरा अनुरोध है कि आप सरकार को डायरेक्ट करिये कि हमारी बात का जवाब दें । हमने पिछले सेशन में स्पेशल मेंशन किया अभी तक ये लोग क्या कर रहे हैं ? फेट यूटिलाइजेशन खत्म होगा या नहीं ? मैं कैटेगरीकली और पिनपाइन्ट करके पूछ रहा हूं कि क्यों जवाब नहीं दिया गया ।

**उप सभाध्यक्ष (श्री हेच० हनुमनतप्पा)** : यह तरीका नहीं है । आप सवाल पूछ कर यह कहें कि इसका जवाब दो । यह तरीका नहीं है कि आपने जो बात कही है वह नोट हो जाएगी, डिपार्टमेंट नोट कर लेगा और जवाब देने की कोशिश करेगा । लेकिन यह तरीका नहीं है कि जो आप कह रहे हैं कि अभी बहस कराओ, अभी जवाब दो । आप सीनियर मैम्बर हैं और यह जानते हैं कि यह तरीका नहीं है ।

**श्री राम अवधेश सिंह** : इसका जवाब दो तीन महीनों से नहीं आया है . . . (**व्यवधान**) ।

**उप सभाध्यक्ष (श्री हेच० हनुमनतप्पा)**: मैंने कहा है कि यह तरीका नहीं है । (*Interruptions*). You have made your point. Please listen to me. I have told you that this is not the debate. Please sit down.

**श्री राम अवधेश सिंह** : : आप इनको कहिये कि दो-तीन रोज में जवाब दें ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): This is not the way. I am giving a ruling that you cannot get a reply across the table. There is a method, there is a rule. (*Interruptions*).

**श्री राम अवधेश सिंह** : पिछले सेशन का अभी तक जवाब नहीं आया । क्यों ?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): Mr. Ram Awadhesh Singh, you should have the patience to listen to the Chair and the other Members. I have already told you that there is a method, three is a rule prescribed that the Special Mentions will be taken to note of and replies will come to you. What more do you want? You want the answer to be given on the floor of the House?

**श्री राम अवधेश सिंह** : मेरा कहना यह है कि सरकार बहरी है, गूंगी है, बेईमान है ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): That has also been noted. That has also been taken note of.

**श्री सत्य प्रकाश मालवीय** : महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है ? यहां पर संसदीय कार्य मंत्री जी भी उपस्थित हैं ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): First, at least you control your Member. Then I can allow you. You do not maintain any discipline in the House.

**श्री सत्य प्रकाश मालवीय** : मेरा व्यवस्था का प्रश्न है यह कि जो संसदीय कार्य मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट आती है उसमें इस बात हर साल लिखा रहता है जो सदस्य स्पेशल मेंशन उठाते हैं उनको उसका उत्तर तीन सप्ताह के अंदर मिल जाना चाहिए । श्री राम अवधेश सिंह जी ने यह कहा है कि पिछले सत्र में यानी तीन महीने पहले उन्होंने स्पेशल मेंशन किया था लेकिन उसका उत्तर आज तक नहीं आया । मैं आपके माध्यम से, यहां पर और भी माननीय सदस्य उपस्थित होंगे, जिनके पास उनके स्पेशल मेंशन के उत्तर नहीं आए होंगे । मैंने भी आठ स्पेशल मेंशन उठाए थे लेकिन उनका उत्तर भी नहीं आया है । मान्यवर, मैं आपके माध्यम से संसदीय कार्य मंत्री जो यहां पर उपस्थित हैं, मैं सिर्फ यह जानना चाहता हूं कि सरकार ने जो नियम बना रखे हैं, जो परिपाटी बनी हुई है कि तीन सप्ताह के अंदर विशेष उल्लेख का जवाब दे दिया जाएगा उसका पालन क्यों नहीं हो रहा है ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): There is no point of order, number one. Number two, I request the Government to take note of the feelings of the Members and see that proper replies are sent according to rules.

**श्री राम अवधेश सिंह** : मैं आपकी रूलिंग का आदर करता हूं । लेकिन मंत्री महोदय से जो पूछा गया है उसके बारे में वे क्या कहना चाहते हैं, उनको इसमें क्या कठिनाई है और तीन महीने तक जवाब न देने का क्या कारण है ?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): If you do not allow the House to continue, we will have to take other measures. Please sit down.

**श्री राम अवधेश सिंह** : लीजिए मेजर्स ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): I request you to sit down. You want to disobey the Chair?

**श्री राम अवधेश सिंह** : मैं नहीं बैठूंगा । जवाब न देने का क्या कारण है ?

**उप सभाध्यक्ष (श्री एच० हनुमनतप्पा)**: ऐसा नहीं होता । I have already given the ruling.

**श्री राम अवधेश सिंह** : आप सक्षम हैं उनको डाइरेक्ट करने के लिए ।

**उपसभाध्यक्ष (श्री हेच० हनुमनतप्पा)**: कर दिया है लेकिन अभी जवाब देने के लिए नहीं कर सकता हूं ।

**श्री राम अवधेश सिंह** : कारण बताइये कि किन कारणों से इन्होंने उसका जवाब नहीं दिया ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): Nothing of Mr. Ram Awadhesh will go on record. Why are you behaving like this?

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL (Punjab): Sir, it is very unfortunate that he is treating the entire House in this way.

**श्री राम अवधेश सिंह** : **

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): I do not want you answer. Please sit down.

**श्री पशुपति नाथ सकुल** : इनका स्पेशल मेंशन इतना इम्पार्टेंट नहीं है जो ये सब का टाइम ले रहे हैं । . . . (**व्यवधान**)

---

**Not recorded.

SHRI RAM AWADHESH SINGH: **

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI M. M. JACOB): Sir, if the hon. Member is speaking anything against your direction, it must be expunged from the record. If he is speaking beyond your permission and against your wishes, it must be taken out of the record.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): I have already said that. It is not to go on record.

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL: Sir, you take action against him. (*Interruptions*).

SHRI M. M. JACOB: I am not arguing with him. I am only requesting the Chair.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): Please clear out. You cannot stop the proceedings. Please go out.

SHRI RAM AWADHESH SINGH: **

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): Either you keep quiet or go out. You have no right to disturb the proceedings of the House. That is my ruling.

SHRI B. SATYANARAYAN REDDY (Andhra Pradesh): Mr. Vice-Chairman, Sir,...

SHRI RAM AWADHESH SINGH: **

श्री पवन कुमार बांसल : यही तो कर रहे हैं, जानबूझ कर हल्ला कर रहे हैं . . . (व्यवधान)

SHRI B. SATYANARAYAN REDDY: Sir, he will not speak now. Let me say one word. I am very sorry that the Parliamentary Affairs Minister, instead of giving the answer to him, provoked him. He would have sat down... (*Interruptions*)...

SHRI RAM AWADHESH SINGH: **

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL: Did you listen to what the Vice-Chairman has said?... (*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): Mr. Reddy, please sit down... (*Interruptions*) ...The Minister was on a different point—not on that point. Because he was disobeying the Chair... (*Interruptions*)...Please sit down. I am watching all the proceedings. The Minister raised a different issue—not on that.

SHRI M. M. JACOB: Should I repeat what I said?... (*Interruptions*) ...

श्री पशुपति नाथ सकुल (उत्तर प्रदेश): इस तरह से हाउस का टाइम यह नहीं ले सकते (व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (श्री हेच० हनुमनतप्पा) : राम अवधेश सिंह जी, आप बैठेंगे या नहीं . . . (व्यवधान)

श्री राम अवधेश सिंह : * *

SHRI M. M. JACOB: What the honourable Member said was about the *dharna* that he staged sometime back. I requested him to go and meet the Chairman in his chamber and not to raise it here. But there was no assurance on the issue... (*Interruptions*)...That is a totally different version. He has a right to go to the Chairman and present it... (*Interruptions*)...

SHRI RAM AWADHESH SINGH: **

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): Mr. Ram Awadhesh Singh, this is not the way—I am again telling you. Please sit

**Not recorded.

down... (*Interruptions*)...What are you talking, what is this argument, what do you want? You cannot get answers like this... (*Interruptions*) You cannot hold the House to ransom; you cannot disturb the proceedings. आप बैठिये । अभी बैठिए । (व्यवधान) नहीं तो बाहर चले जाइये ।

**श्री राम अवधेश सिंह : ****

**श्री पशुपति नाथ सकल** : उपसभाध्यक्ष जी, मेरा यह प्रस्ताव है कि इनको शाम तक के लिए सस्पेंड कर दिया जाए ।

SHRI PAWAN KUMAR SANSAL: I second the motion, Sir.

SHRI P. N. SUKUL: He must be suspended... (*Interruptions*)...

**श्री पवन कुमार बांसल** : प्रोपोजल हो गया और सेंकेंड भी हो गया है (व्यवधान)

**श्री पशपति नाथ सुकुल** : आप उनको एक्सपेल कीजिए ।

**श्री पवन कुमार बांसल** जसवंत सिंह जी क्या आप उनको बैठने के लिए नहीं कह सकते । (व्यवधान)

**उपसभाध्यक्ष (श्री हेच० हनुमनतप्पा)** : राम अवधेश जी आप बैठ जाइए । (व्यवधान)

**श्री पशुपति नाथ सुकुल** : यह ऐसे मानेंगे नहीं । (व्यवधान) अभी एक घंटा भर और परेशान करेंगे आपको ।

**श्री पवन कुमार बांसल** : यह भूल गए हैं कि सदन की गरिमा क्या है, क्या डिग्निटी है इस हाउस की । यह तो सड़क वाली बात करना चाहते हैं, सड़क समझते हैं सदन को ।

**श्री पशुपति नाथ सुकुल** : आप उनको नहीं बैठा पा रहे हैं ।

**श्री राम अवधेश सिंह : ****

**उपसभाध्यक्ष (श्री हेच० हनुमनतप्पा)** : आप बैठिए और सुनिए । (व्यवधान)

**श्री राम अवधेश सिंह : ****

SHRI P. N. SUKUL: He must be suspended for the day.

SHRI RAM AWADHESH SINGH: **

**उपसभाध्यक्ष (श्री हेच० हनुमनतप्पा)** : आप बैठ जाइए । हाउस की कार्यवाही चलने दीजिए । (व्यवधान)

आपने जो कुछ कहा वह सुन लिया गया है । अब आप बैठिए (व्यवधान) You cannot hold the House to ransom You cannot disturb the proceedings of the House. You have had your say You have said it, Government has taken note of it and they will act on that. So, don't disturb the House... (*Interruptions*)...I have already told you to clear out of the House. If you don't obey that, I will have to... (*Interruptions*)...

गवर्नमेंट ने आपकी बात सुन ली है । लेकिन अब आप सभा की कार्यवाही को चलने दीजिए । । इस तरह से सभा की कार्यवाही को स्थगित करने की कोशिश जो आप कर रहे हैं वह ठीक नहीं है । आप बैठिए और कार्यवाही चलने दीजिए । (व्यवधान)

**श्री राम अवधेश सिंह : ****

**उपसभाध्यक्ष (श्री हेच० हनुमनतप्पा)** : सुनिए । ऐसे बातचीत नहीं चलेगी ... (व्यवधान) आप बैठिए । जैकब साहब से बात करनी हो तो बाहर जाकर बात कीजिए ।

**Not recorded.

श्री राम अवधेश सिंह**

SHRI P. N. SUKUL: More than half an hour he has taken.

SHRI RAM AWADHESH SINGH:**

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): Mr. Awadhesh Singh, are you keeping quiet or clearing out?

SHRI RAM AWADHESH SINGH:* No.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): Then, I am sorry, I have to name you.

SHRI RAM AWADHESH SINGH:*

SHRI JASWANT SINGH (Rajasthan): With your permission, Mr. Vice-Chairman,...

SHRI M. M. JACOB: I move the motion, Sir:

"That Shri Ram Awadhesh Singh be suspended for the day."

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): He does not even sit.

SHRI RAM AWADHESH SINGH:**

SHRI JASWANT SINGH: Mr. Vice-Chairman, before you put the motion, give me half a minute.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): Yes, Mr. Jaswant Singh.

SHRI JASWANT SINGH: Mr. Chairman, with due deference and respect and fully sharing the concern of the entire House, I would request the hon. Minister of State for Parliamentary Affairs not to press the motion. It is an unprecedented step we seldom take it in this House. I am in sympathy... (*Interruptions*)...

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL: I would like to know from Mr. Jaswant Singh...

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY (Andhra Pradesh): If you do not have discipline, how can you expect it from anybody else?

SHRI JASWANT SINGH: I share my colleague, Mr. Bansal's sense of anger and grievance. All that I request is: please sense his pain and his grievance. If he has gone to the extreme step of doing what he is doing it does not behave the collectivity of us also to take an extreme stand. This House has seldom taken the extreme step of naming a Member, or of expelling him from the House even for a day. I would request the hon. Minister of State to reconsider his motion. There is obvious pain which the Member feels.

SHRI P. N. SUKUL: What is your appeal to the Member?

SHRI JASWANT SINGH: I do appeal to the Member. Please understand, my appeal is not parochial. I am very much appealing to the Member who is sitting with me on the same side of the well. I do not for a minute condone not respecting the Chair, or the Chair's verdict. All that I am requesting the collectivity of the House is to exercise restraint when confronted with an extreme stand. I would request my colleague, Mr. Ram Awadhesh Singh to desist. His point has been well enough made. I would request the hon. Minister of State to give an assurance because the hon. Member has not been replied for three months. That is a contravention of parliamentary tradition. Give that assurance, and let that motion be withdrawn.

SHRI B. SATYANARAYAN REDDY: Sir, I fully associate with him.

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: Sir, I too associate.

SHRI M. M. JACOB: Sir, the matter which prompted me to move this motion is not on the merit of anything

**Not recorded.

that Mr. Ram Awadhesh Singh mentioned in this House. But, when continuously a Member is disobeying the Chair and the House is almost virtually taken to ransom, the proceedings of the House almost becoming impossible, there was no other way open to the House other than requesting the Chairman by the Members to restore order in the House. You, in your wisdom, tried very much to restore order in the House, and ultimately you yourself felt that it was not possible to run the House when somebody was having a running commentary continuously. Under the circumstances, I have nothing against the Member. He is a respected Member of this House, and I would like him to be in the House but also listen to the orders of the Chair. Otherwise, the House cannot function like that. In these circumstances I move the motion. In these circumstances I have to move the motion. If the Chair gets the word from the Member that he is going to obey you and to listen to you and allows the House to function, I am not pressing for this. But if he does not, I will have to press for it. I am expressing the anxiety...

1 P.M.

श्री राम अवधेश सिंह : आप जवाब तो दीजिए । ...(व्यवधान) लेकिन यह जवाब तो देंगे नहीं ।

उपसभाध्यक्ष (श्री हेच० हनुमनतप्पा) : आप बैठ जाइये । जरा मेरी बात तो सुनिए ।

श्री राम अवधेश सिंह : आप उनसे आश्वासन तो दिलवाइये ।

उपसभाध्यक्ष (श्री हेच० हनुमनतप्पा) : आप जरा मेरी बात तो सुनिए ।

अभी तो हाउस दूसरे विषय पर है। अभी तो उन्होंने मोशन पर अपना मत प्रकट किया है । मैं आपसे कहता हूं कि–

Are you regretting about your action regarding the Chair?

श्री राम अवधेश सिंह : नो, नो । इसका तो सवाल ही नहीं उठता ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): I am sorry I have no other go but to put the motion to the vote of the House.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY (Karnataka): May I make a last appeal to my colleague here. You also did not listen to me earlier, but I will make an appeal to him not to lose temper for the time being. He has raised the issue on the floor of the House. Raising the issue on the floor of the House is taken note of by...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): I have given my observations also.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: Yes, you have also made observations. I would only say that the Government should seriously consider the point raised by my hon. colleague here and in good time, as early as possible, they should make their observations on the floor of the House, about what action they have taken in this regard. So, I would request him to keep quiet for the time being and allow us also. We are sympathetic to you also. Therefore, Sir, I think let the matter rest there and we should move to the next subject.

SHRI M. M. JACOB: Mr. Gurupadaswamy gave a hint that the Government is not considering. Whatever is mentioned in the Special Mentions, the Government is seriously considering and the Members are given reply also.

श्री राम अवधेश सिंह : तीन महीने तक आपने जवाब नहीं दिया, यह मेरा सवाल है । ...(व्यवधान) ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): This is the way.

श्री राम अवधेश सिंह: आप यहां मंत्री बने हुए हैं और हम लोग चिल्ला रहे हैं, पर कुछ नहीं होता है। (व्यवधान) आप पहले आश्वासन दीजिए कि जवाब दिलवायेंगे।

श्रीमति रेणुका चौधरी: मंत्री जी, आप कह दीजिए कि जवाब देंगे।

श्री राम अवधेश सिंह: एक चीज की कोई सीमा होती है। तीन-तीन महीने धरना दिया, चिटठी लिखी, कुछ भी नहीं किया गया।

SHRI M. M. JACOB: I have not withdrawn the Motion.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): I am on my legs.

SHRI M. M. JACOB: This running commentary is again going on.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): Mr. Gurupadaswamy, in spite of your appeal, I am sorry the Member is not taking a hint.

श्री राम अवधेश सिंह: मैंने जो किया है जनता की ओर से मैंने सही किया है। बिहार की जनता की भावना को देखते हुए रिग्रेट का कोई सवाल नहीं है।

मैं समझता हूं कि दोषी मंत्री है, उनको बाहर करना चाहिए। लेकिन उनकी जगह पर हमको बाहर कर रहे हैं। यह खेदजनक है कि आप हमको बाहर करने के लिए कह रहे हैं। (व्यवधान)। निकालना तो चाहिए था मंत्री को ... (व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (श्री हेच० हनुमनतप्पा): आप बैठ जाइये।

SHRI MIRZA IRSHADBAIG (Gujarat): He has crossed all limits.

SHRI KAMAL MORARKA (Rajasthan): I am on a point of order, Sir. According to our Parliamentary procedure a special mention is supposed to take three minutes, five minutes is the maximum. After that the Government is supposed to reply in three months.

THAKUR JAGATPAL SINGH (Madhya Pradesh): Not immediately. In three weeks.

SHRI KAMAL MORARKA: You are not hearing me. Are you in the Chair? First of all you should not be arrogant. I said in three months.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): Mr. Morarka, point of order is between the Chair and the Member.

SHRI KAMAL MORARKA: Why is he interfering then?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): It applies to both sides.

SHRI KAMAL MORARKA: They interfere because they do not want to listen to sanity.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): You address the point of order.

SHRI KAMAL MORARKA: My point of order is when a special mention is made in the House, it must be replied to by the Government within three months.

AN HON. MEMBER: Within three weeks.

SHRI KAMAL MORARKA: There are umpteen instances when they have not been replied to. Even my

special mentions have not been replied to. If we are not resorting to the same tactic as that of the Member, it it is not because we are not aggrieved. It is because of the sanctity of the Parliamentary system and this forum which you are talking about. Now, I want your protection. Why can't the Minister utter one sentence and say that he has noted his special mention and he will reply within three weeks or one month or whatever the period he wants to specify? If that small thing is said, the Member will be satisfied.

I want your ruling on this point of order.

SHRI M. M. JACOB: Mr. Morarka was correct in saying that when a special mention is made by the Member, the Chair usually directs the concerned Minister to take appropriate action and look into the matter. Even without that Government would take action on the matter that is raised. In this particular case since it has been specially brought to my notice, certainly. It will be taken care of by the Government. It is not my area. The concerned Minister will be asked to respond to it. That is all.

SHRI P. N. SUKUL: Mr. Vice-Chairman, you have heard everybody and now please hear me.

श्री राम अवधेश सिंह : बहस कराने के लिए.... (व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (श्री हेच० हनुमनतप्पा): अब आप बैठिए।

श्री राम अवधेश सिंह : बहस कराने के लिए क्या कह रहे हैं?

उपसभाध्यक्ष (श्री हेच० हनुमनतप्पा): आप बैठिए।

SHRI P. N. SUKUL: He is not going to obey your order. Please sit down. The Chair has allowed me to speak.

श्री राम अवधेश सिंह : मैं सदन से सफाई चाहूंगा।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): Mr. Singh, please sit down.

SHRI P. N. SUKUL: Mr. Vice-Chairman, it is indeed a fact that the Government's reply or reaction must go to the Member as soon as possible or within three weeks or within a month. But if it does not go, it does not mean that any Member can hold the House to ransom. It does not mean that any Member can...

श्री राम अवधेश सिंह : महोदय, .... (व्यवधान)

SHRI P. N. SUKUL: It does not mean that any Member can take away the time of the other Members in the House... (*Interruptions*)... is it the justification? He must be thrown out... (*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): Please sit down. Mr. Morarka, there is no question of a point of order. I rule it out. The procedures are very clear. If the reply does not come within three weeks on the special mention, then, you can write to the Chairman. Then, the Chairman will direct the Government. There is already a procedure and Members can follow that procedure.

श्री राम अवधेश सिंह : वह प्रोविजन तो रोज टूट रहा है।

उपसभाध्यक्ष (श्री हेच० हनुमनतप्पा) : अभी आप कृपया बैठेंगे। Mr. Gurupadaswamy, I would request you now to retrain him. आप बैठिए।

श्री राम अवधेश सिंह : मैं आपसे कह रहा हूं .... (व्यवधान)

**उपसभाध्यक्ष (श्री हेच० हनुमनतप्पा)** : आपका आश्वासन भी हो गया । अब आप बैठिए ।

**श्री राम अवधेश सिंह** : बहस कब करायेंगे ?

Even for that there are provisions for the Members wherein they can raise the issue for discussion and you can utilise that provision.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): You can raise the discussion even on Bihar or on any important issue and this House can discuss it. There are remedies and you can go through them. Kumari Sayeeda Khatun.

**Delay in awarding National Awards to teachers in Madhya Pradesh and other States of the country**

**कुमारी सईदा खातून** (मध्य प्रदेश) : माननीय उप सभाध्यक्ष महोदय, मैं स्पेशल मेंशन के माध्यम से मंत्री महोदय से यह जानना चाहूंगी ।

**श्री राम अवधेश सिंह** (बिहार) : आपने आश्वासन नहीं दिया इसलिए मैं वाक-आउट करता हूं ।

**कुमारी सईदा खातून** : और सरकार का ध्यान... (**व्यवधान**)

**श्री राम अवधेश सिंह** : वाक-आउट करता हूं... (**व्यवधान**)

[At this stage the hon. Member left the Chamber.]

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): It is not going on record. I have not permitted.

**कुमारी सईदा खातून** : मैं सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहती हूं कि आखिर इस वर्ष मध्य प्रदेश के शिक्षकों को वर्ष 1988 के देश के सर्वोच्च पुरस्कार से क्यों वंचित रखा गया है । भूतपूर्व राष्ट्रपति देश के महान दार्शनिक स्व० डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जन्म शताब्दी के होने के कारण वर्ष 1988 से शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कारों की संख्या...।

**उपसभाध्यक्ष (श्री हेच० हनुमनतप्पा)** : सईदा खातून एक मिनट के लिए रुकिए ।

In spite of the persuasion from the Opposition Leaders and in spite of the gesture from the Government side in not pressing the motion, I am sorry to say that the Member chose his own way to walk out. The House did not like him to be thrown out. Unfortunately good sense did not prevail upon the Member. It is very unfortunate that the Member disturbed the proceedings of the House and disobeyed the Chair. Even any amount of restraint observed from the Government side and the Chair was not heeded to by the Member, I am very sorry to go on record.

**कुमारी सईदा खातून** : भूतपूर्व राष्ट्रपति, देश के महान दार्शनिक स्वर्गीय डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जन्म-शताब्दी होने के कारण वर्ष 1988 से शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कारों की संख्या 180 से बढ़ाकर 300 कर दी गई है । खेद का विषय तो यह है कि एक ओर तो नई शिक्षा-नीति के अंतर्गत शिक्षा के प्रसार में गति और परिवर्तन लाने की योजनाएं चलाई जा रही हैं, लेकिन दूसरी ओर पूरे देश में 300 शिक्षक भी नहीं मिले, जिन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया जा सके । ऐसी स्थिति में शिक्षा के क्षेत्र में क्या कोई परिवर्तन लाया जा सकता है । समाचार-पत्रों की रिपोर्ट से ऐसा आभास होता है कि संभवतः भारत सरकार को राज्य शासन से समय पर प्रस्ताव प्राप्त नहीं हुए होंगे । इसके लिए संबंधित कर्मचारी/अधिकारी को शिथिलता के लिए दंडित किया जा सकता है, लेकिन योग्य शिक्षकों को राष्ट्रीय सम्मान से वंचित रखना अन्याय होगा ।